जगदगुरू श्री शंकराचार्य ने भारतवर्ष को आध्यात्म के द्वंद से निकालकर एक नई दिशा दी: प्रो कैलाश चंद्र शर्मा

बीपीएसएमवी में जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी के दर्शन विषयक संगोष्ठी आयोजित

खानपुर कलां,चेतना संवाददाता। भारतीय संस्कृति व आध्यात्म के पुरोधा जगदगुरू श्री शंकराचार्य ने भारतवर्ष को आध्यात्म के द्वंद्व से निकालकर एक नई दिशा दी है। उन्होंने वेदों को सरल भाषा में समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया। भारतीय संस्कृति के कालजयी और यशस्वी उन्नायक शंकराचार्य के जीवन वर्षों की संख्या भले ही कम रही हो, पर उन द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या अनेक जीवन के समकक्ष है। यह उद्गार हरियाणा उच्चतर शिक्षा परिषद, पंचकूला के अध्यक्ष प्रो कैलाश चंद्र शर्मा ने बतौर मुख्य अतिथि भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय में आयोजित -जगदगुरू श्री शंकराचार्य जी के दर्शन विषयक संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए। प्रो कैलाश चंद्र शर्मा ने अपने ओजस्वी संबोधन में कहा कि शंकराचार्य ने संवाद, शास्त्रार्थ तथा भारतीय वेदों, गीता और उपनिषदों पर भाष्य लिखकर यह प्रमाणित किया है कि भारतीय जीवन शैली श्रेष्ठ है। उन्होंने वर्तमान समय में शंकराचार्य के जीवन दर्शन को जानने की आवश्यकता पर बल दिया। प्रो कैलाश चंद्र शर्मा ने अपने संबोधन में भारतीय भाषा समिति की सराहना करते हुए कहा कि भारतीय भाषा समिति देश भर के उच्च शिक्षण संस्थानों में जगद्गुरु श्री शंकराचार्य के व्याख्यान के लिए सहयोग कर रही है। इस व्याख्यान का उद्देश्य आदि गुरु शंकराचार्य के जीवन दर्शन को छात्र समुदाय के मध्य लाना है।

इस संगोष्ठी में अध्यक्षीय संबोधन करते हुए महिला विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो सुदेश ने कहा कि भारत के महानतम दार्शनिक शंकराचार्य का दर्शन आज भी प्रासंगिक है और इसे छात्रों तक सरल भाषा में पहुंचाने में शिक्षण संस्थान एक अहम भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने कहा कि यह संगोष्ठी काफी

अर्थपूर्ण है और ऐसे आयोजन हमारे विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति और भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ने में सहायक सिद्ध होते हैं। कुलपति प्रो सुदेश ने कहा कि जगतगुरु श्री शंकराचार्य ने भारत की एकता और अखंडता को बनाए रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने लोगों को सही-गलत की दुविधा से निकालकर पूरे भारतवर्ष को एक सूत्र में बांधा और देशभर की यात्रा करते हुए चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की। यह चारों ज्योति पीठ भारत की अखंडता एवं एकता के प्रतीक हैं।

इस संगोष्ठी में वक्ता के रूप में संबोधन करते हुए जेएनयू, नई दिल्ली के प्रो रजनीश कुमार मिश्रा ने कहा कि बहुप्रचार व दुष्प्रचार के कारण अद्वैत मत को लेकर अनेक भ्रांतियां समाज में व्याप्त हैं। उन्होंने अपने संबोधन में इन भ्रांतियां पर चर्चा करते हुए कहा कि भारतीय चिंतन शैली वैश्विक है। उन्होंने जगतगुरु शंकराचार्य को भारतीय संस्कृति का व्याख्याता बताते हुए भारतीय दर्शन पर भी चर्चा की। बतौर वक्ता, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की प्रो विभा अग्रवाल ने आदि शंकराचार्य के भाष्य प्रवाह पर अपने विचार रखते हुए कहा कि सभी दर्शन ग्रंथों का स्रोत वेद है। उन्होंने शंकराचार्य द्वारा रचित भज गोविंदम को भी उद्धृत करते हुए कहा कि लिखित ज्ञान को अक्षरशः ग्रहण करने की बजाय उसके भाव एवं तात्पर्य को ग्रहण करना महत्वपूर्ण है।

डीन, फैकल्टी आफ सोशल साइंस प्रो रवि भूषण ने मुख्य अतिथि एवं वक्ताओं का परिचय देते हुए स्वागत संबोधन किया तथा इस संगोष्ठी का संचालन किया। इस संगोष्ठी के कन्वीनर एवं डीन एकेडमिक अफेयर्स प्रो संकेत विज ने इस आयोजन द्वारा राष्ट्र चेतना की अलख जगाने में अहम सहयोग के लिए भारतीय भाषा समिति का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। इस दौरान विभिन्न संकायों के डीन, विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक एवं विद्यार्थी मौजूद रहे।

'शंकराचार्य ने वेदों को सरल भाषा में समाज के सामने प्रस्तुत किया'

वि., गोहाना : हरियाणा उच्चतर शिक्षा परिषद पंचकूला के अध्यक्ष प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा ने कहा कि भारतीय संस्कृति व अध्यात्म के पुरोधा जगद्गुरु शंकराचार्य ने भारतवर्ष को अध्यात्म के द्वंद्व से निकालकर एक नई दिशा दी। उन्होंने वेदों को सरल भाषा में समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया। उन्होंने यह बात बतौर मुख्य अतिथि भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय में आयोजित 'जगद्गुरु श्री शंकराचार्य के दर्शन' विषय पर आयोजित संगोष्ठी के शुभारंभ पर प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कही।

प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा ने कहा कि शंकराचार्य ने संवाद, शास्त्रार्थ और भारतीय वेदों, गीता और उपनिषदों पर भाष्य लिखकर यह प्रमाणित किया है कि भारतीय जीवन शैली श्रेष्ठ है। उन्होंने वर्तमान में शंकराचार्य के जीवन दर्शन को जानने की आवश्यकता पर बल दिया। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुदेश ने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि दार्शनिक शंकराचार्य का दर्शन आज भी प्रासंगिक है और इसे छात्रों तक सरल भाषा में पहुंचाने में शिक्षण संस्थान एक अहम भूमिका निभा सकते हैं। शंकराचार्य ने भारत की एकता और अखंडता को बनाए रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने लोगों को सही-गलत की दुविधा से निकालकर पूरे भारतवर्ष को एक सूत्र में बांधा और देशभर की यात्रा करते हुए चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की। ये चारों ज्योति पीठ भारत की अखंडता एवं एकता के प्रतीक हैं। जेएनयू के प्रो. रजनीश कुमार मिश्रा, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की प्रो. विभा अग्रवाल ने भी विचार व्यक्त किए। इस मौके पर डीन फैकल्टी आफ सोशल साइंस प्रो. रवि भूषण व डीन एकेडमिक अफेयर्स प्रो. संकेत विज मौजूद रहे।

प्रो. कैलाश चंद्र संगोष्ठी को संबोधित करते हुए● सौ. विश्वविद्यालय

शंकराचार्य ने देश को नई दिशा दी : प्रो. कैलाश चंद्र

बीपीएस महिला विश्वविद्यालय में संगोष्ठी का शुभारंभ करते प्रो. कैलाश चंद्र । स्रोतः विवि

गोहाना। भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय में सोमवार को जगद्गुरु श्री शंकराचार्य के दर्शन विषय पर संगोष्ठी हुई। इस दौरान मुख्य अतिथि हरियाणा उच्चतर शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा कहा कि जगद्गुरु शंकराचार्य ने देश को अध्यात्म के द्वंद्व से निकालकर एक नई दिशा दी है। उन्होंने वेदों को सरल भाषा में समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया।

कुलपति प्रो. सुदेश ने कहा कि शंकराचार्य का दर्शन आज भी प्रासंगिक है और इसे छात्रों तक सरल भाषा में पहुंचाने में शिक्षण संस्थान एक अहम भूमिका निभा सकते हैं। जगद्गुरु शंकराचार्य ने देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली के प्रो. रजनीश मिश्रा ने कहा कि बहु प्रचार व दुष्प्रचार के कारण अद्वैत मत को लेकर अनेक भ्रांतियां समाज में व्याप्त हैं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की प्रो. विभा अग्रवाल ने शंकराचार्य के भाष्य प्रवाह पर विचार रखे। संवाद

बीपीएस महिला विवि में जगदगुरु शंकराचार्य के दर्शन विषय पर संगोष्ठी

'शंकराचार्य ने भारतवर्ष को अध्यात्म के द्वंद्व से निकाल कर नई दिशा दी'

भास्कर न्यूज | गोहाना

हरियाणा उच्चतर शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा ने कहा कि भारतीय संस्कृति व अध्यात्म के पुरोधा जगद्गुरु शंकराचार्य ने भारतवर्ष को अध्यात्म के द्वंद्व से निकाल कर एक नई दिशा दी है। उन्होंने वेदों को सरल भाषा में समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया। शंकराचार्य के जीवन वर्षों की संख्या भले ही कम रही हो, लेकिन उनके द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या विभिन्न जीवन के समकक्ष है। वह बीपीएस महिला विवि में जगद्गुरु शंकराचार्य के दर्शन विषय पर संगोष्ठी के शुभारंभ के उपरांत छात्राओं को संबोधित कर रहे थे।

प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा ने कहा कि शंकराचार्य ने संवाद, शास्त्रार्थ तथा भारतीय वेदों, गीता और उपनिषदों पर भाष्य लिखकर यह प्रमाणित किया है कि भारतीय जीवन शैली श्रेष्ठ है। विवि की कुलपति प्रो. सुदेश ने कहा कि शंकराचार्य का दर्शन आज भी प्रासंगिक है और इसे छात्रों तक सरल भाषा में पहुंचाने में शिक्षण संस्थान अहम भूमिका निभा सकते हैं। प्रो. रजनीश कुमार मिश्रा व कुरुक्षेत्र विवि की प्रो. विभा अग्रवाल ने भी बतौर मुख्य वक्ता शंकराचार्य के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारतीय दर्शन पर भी चर्चा की। इस मौके पर, महिला विवि के फैकल्टी ऑफ सोशल साइंस डीन प्रो. रवि भूषण, संगोष्ठी के कन्वीनर एवं एकेडमिक अफेयर्स डीन प्रो. संकेत विज आदि मौजूद रहे।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा व प्रो. सुदेश।

Fashion for Every Occasion

Hindi News

जगद्गुरु श्री शंकराचार्य ने भारतवर्ष को आध्यात्म के द्वंद्व से निकालकर एक नई दिशा दी हैः प्रो कैलाश चंद्र शर्मा

Girish Saini

HAMPTON HOMES 300+ FAMILIES STRONG

Allen Solly Latest Collection

Allen Solly Latest Collection

Tags: Jagadguru Shri Shankaracharya | new direction to India | Prof. Kailash Chandra Sharma

WHAT'S YOUR REACTION?

LIKE LOVE FUNNY ANGRY SAD WOW

RELATED POSTS

COMMENTS

Name Email Comment

Post Comment

TUESDAY 19TH OF MARCH 2024 06:35:57 AM

ON SELECT HOTELS IN THE USA SAVE 20% Expedia SEE DEALS >

POPULAR POSTS
Weekly Posts
Centre approves Rs 699 crore project to double-lane Gujarat...
Antim Ardas of Kirpal Singh Dardi on March 17
Tata Steel inaugurates fully automated construction service...
Devoleena drops first look of 'Bengal 1947': Blend of history...
Infighting in TMC in Bengal's Murshidabad dist over Kasafs...

FOLLOW US
Facebook Twitter Pinterest Linkedin Youtube Email

RECOMMENDED POSTS
5 energizing breakfast recipes for women on the go
FairPoint: Credibility deficit stymies Rahul's new guarantee...
Training aircraft crashes at Guna airstrip in MP, woman...
5 caffeine-free ways to boost energy naturally
For the adventurous woman solo travelling
IANS Interview: PM Modi has ensured there's no 'jugaad'...

CONTACT US
For advertisement, news, article, feature etc please contact us: cityairnews@gmail.com

The web portal that brings the latest breaking news in Ludhiana and the way across Punjab is using international language i.e. English for daily news. Even today's headline in English was liked by many. The website has business news in English, latest Bollywood gossips, sports updates and political news.

RANDOM POSTS
Thinnest range of chips 'Lay's Wafer Style' launched
Numeric redefines standards in single-phase UPS with launch...

SOCIAL MEDIA
Subscribe here to get interesting stuff and updates!
Subscribe

© 2020 Cityairnews . All Rights Reserved. Designed & Developed by: Techentermation
Terms & Conditions Privacy Policy

आस्था

जगद्गुरु श्री शंकराचार्य ने भारतवर्ष को आध्यात्म के द्वंद्व से निकालकर एक नई दिशा दी है: प्रो कैलाश चंद्र शर्मा

खानपुर कलां, गिरीश सैनी (ऋषि की आवाज ब्यूरो)। भारतीय संस्कृति व आध्यात्म के पुरोधा जगद्गुरु श्री शंकराचार्य ने भारतवर्ष को आध्यात्म के द्वंद्व से निकालकर एक नई दिशा दी है। उन्होंने वेदों को सरल भाषा में समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया। भारतीय संस्कृति के कालजयी और यशस्वी उन्नायक शंकराचार्य के जीवन वर्षों की संख्या भले ही कम रही हो, पर उन द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या अनेक जीवन के समकक्ष है। यह उद्गार हरियाणा उच्चतर शिक्षा परिषद, पंचकूला के अध्यक्ष प्रो कैलाश चंद्र शर्मा ने बतौर मुख्य अतिथि भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय में आयोजित -%जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी के दर्शन विषयक संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए।

प्रो कैलाश चंद्र शर्मा ने अपने ओजस्वी संबोधन में कहा कि शंकराचार्य ने संवाद, शास्त्रार्थ तथा भारतीय वेदों, गीता और उपनिषदों पर भाष्य लिखकर यह प्रमाणित किया है कि भारतीय जीवन शैली श्रेष्ठ है। उन्होंने वर्तमान समय में शंकराचार्य के जीवन दर्शन को जानने की आवश्यकता पर बल दिया। प्रो कैलाश चंद्र शर्मा ने अपने संबोधन में भारतीय भाषा समिति की सराहना करते हुए कहा कि भारतीय भाषा समिति देश भर के उच्च शिक्षण संस्थानों में जगद्गुरु श्री शंकराचार्य के व्याख्यान के लिए सहयोग कर रही है। इस व्याख्यान का उद्देश्य आदि गुरु शंकराचार्य के जीवन दर्शन को छात्र समुदाय के मध्य लाना है।

इस संगोष्ठी में अध्यक्षीय संबोधन करते हुए महिला विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो सुदेश ने कहा कि भारत के महानतम दार्शनिक शंकराचार्य का दर्शन आज भी प्रासंगिक है और इसे छात्रों तक सरल भाषा में पहुंचाने में शिक्षण संस्थान एक अहम भूमिका निभा सकते हैं। कुलपति प्रो सुदेश ने कहा कि जगतगुरु श्री शंकराचार्य ने भारत की एकता और अखंडता को बनाए रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने लोगों को सही-गलत की दुविधा से निकालकर पूरे भारतवर्ष को एक सूत्र में बांधा और देशभर की यात्रा करते हुए चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की। यह चारों ज्योति पीठ भारत की अखंडता एवं एकता के प्रतीक हैं।

इस संगोष्ठी में वक्ता के रूप में संबोधन करते हुए जेएनयू, नई दिल्ली के प्रो रजनीश कुमार मिश्रा ने कहा कि बहुप्रचार व दुष्प्रचार के कारण अद्वैत मत को लेकर अनेक भ्रांतियां समाज में व्याप्त हैं। उन्होंने अपने संबोधन में इन भ्रांतियां पर चर्चा करते हुए कहा कि भारतीय चिंतन शैली वैश्विक है। उन्होंने जगतगुरु शंकराचार्य को भारतीय संस्कृति का व्याख्याता बताते हुए भारतीय दर्शन पर भी चर्चा की। बतौर वक्ता, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की प्रो विभा अग्रवाल ने आदि शंकराचार्य के भाष्य प्रवाह पर अपने विचार रखते हुए कहा कि सभी दर्शन ग्रंथों का स्रोत वेद है। उन्होंने शंकराचार्य द्वारा रचित भज गोविंदम को भी उद्धृत करते हुए कहा कि लिखित ज्ञान को अक्षरशः ग्रहण करने की बजाय उसके भाव एवं तात्पर्य को ग्रहण करना महत्वपूर्ण है।

पंजाब केसरी
TUE,19 MARCH 2024
EDITION: SONIPAT KESARI, PAGE NO. 4

आदि शंकराचार्य ने अध्यात्म के द्वंद्व से निकाल कर भारतवर्ष को एक नई दिशा दी: प्रो. शर्मा

गोहाना, 18 मार्च (अरोड़ा): भारतीय संस्कृति व अध्यात्म के पुरोधा आदि शंकराचार्य ने भारतवर्ष को अध्यात्म के द्वंद्व से निकालकर एक नई दिशा दी है।

उन्होंने वेदों को सरल भाषा में समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया। भारतीय संस्कृति के कालजयी और यशस्वी उन्नायक शंकराचार्य के जीवन वर्षों की संख्या भले ही कम रही हो, पर उन द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या अनेक जीवन के समकक्ष है।

सोमवार को ये उद्गार हरियाणा उच्चतर शिक्षा परिषद, पंचकूला के अध्यक्ष प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा ने बी.पी.एस. महिला विश्वविद्यालय में आयोजित - 'जगद्गुरु शंकराचार्य के दर्शन' विषयक संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए।

प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा ने कहा कि शंकराचार्य ने संवाद, शास्त्रार्थ तथा भारतीय वेदों, गीता और उपनिषदों पर भाष्य लिखकर यह प्रमाणित किया है कि भारतीय जीवन शैली श्रेष्ठ है। उन्होंने वर्तमान समय में शंकराचार्य के जीवन दर्शन को जानने की आवश्यकता पर बल दिया।

वी.सी. प्रो. सुदेश के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा। (अरोड़ा)

लोगों को सही-गलत की दुविधा से निकालकर पूरे भारतवर्ष को एक सूत्र में बांधा

अध्यक्षीय संबोधन में महिला विश्वविद्यालय की वी.सी. प्रो सुदेश ने कहा कि भारत के महानतम दार्शनिक शंकराचार्य का दर्शन आज भी प्रासंगिक है और इसे छात्रों तक सरल भाषा में पहुंचाने में शिक्षण संस्थान एक अहम भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने कहा कि शंकराचार्य ने लोगों को सही-गलत की दुविधा से निकालकर पूरे भारतवर्ष को एक सूत्र में बांधा और देशभर की यात्रा करते हुए चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की। यह चारों ज्योति पीठ भारत की अखंडता एवं एकता के प्रतीक हैं।

जे.एन.यू., नई दिल्ली के प्रो. रजनीश कुमार मिश्रा ने कहा कि बहुप्रचार व दुष्प्रचार के कारण अद्वैत मत को लेकर अनेक भ्रांतियां समाज में व्याप्त हैं। भारतीय चिंतन शैली वैश्विक है। के.यू. की प्रो. विभा अग्रवाल ने आदि शंकराचार्य के भाष्य प्रवाह पर अपने विचार रखते हुए कहा कि सभी दर्शन ग्रंथों का स्रोत वेद है।

डीन, फैकल्टी ऑफ सोशल साइंस प्रो. रवि भूषण ने संगोष्ठी का संचालन किया। संगोष्ठी के कन्वीनर डीन एकैडमिक अफेयर्स प्रो. संकेत विज रहे।

हरिभूमि
epaper.haribhoomi.com
Rohtak Sonipat - 19 Mar 2024 - Page 4

शंकराचार्य के दर्शन विषयक संगोष्ठी

जगद्गुरु शंकराचार्य ने दुनिया को दी नई दिशा, आदि गुरू ने वेदों को सरल भाषा में समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया: प्रो. सुदेश

गोहाना। दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा व प्रो. सुदेश।

■ बीपीएस. महिला विश्वविद्यालय में संगोष्ठी का उदघाटन प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा एवं प्रो. सुदेश ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना

भारतीय संस्कृति व अध्यात्म के पुरोधा आदि शंकराचार्य ने भारतवर्ष को अध्यात्म के द्वंद्व से निकालकर एक नई दिशा दी है। वेदों को सरल भाषा में समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया। भारतीय संस्कृति के कालजयी और यशस्वी उन्नायक शंकराचार्य के जीवन वर्षों की संख्या भले ही कम रही हो, पर उन द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या अनेक जीवन के समकक्ष है। सोमवार को ये उद्गार हरियाणा उच्चतर शिक्षा परिषद, पंचकूला के अध्यक्ष प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा ने बीपीएस. महिला विश्वविद्यालय में आयोजित जगद्गुरु आदि शंकराचार्य के दर्शन विषयक संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए।

प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा ने कहा कि शंकराचार्य ने संवाद, शास्त्रार्थ तथा भारतीय वेदों, गीता और उपनिषदों पर भाष्य लिखकर यह प्रमाणित किया है कि भारतीय जीवन शैली श्रेष्ठ है। उन्होंने वर्तमान समय में आदि शंकराचार्य के जीवन दर्शन को जानने की आवश्यकता पर बल दिया। अध्यक्षीय संबोधन में महिला विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुदेश ने कहा कि भारत के महानतम दार्शनिक शंकराचार्य का दर्शन आज भी प्रासंगिक है और इसे छात्रों तक सरल भाषा में पहुंचाने में शिक्षण संस्थान एक अहम भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने कहा कि शंकराचार्य ने लोगों को सही-गलत की दुविधा से निकालकर पूरे भारतवर्ष को एक सूत्र में बांधा और देशभर की यात्रा करते हुए चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की। डीन, फैकल्टी ऑफ सोशल साइंस प्रो. रवि भूषण ने संगोष्ठी का संचालन किया। संगोष्ठी के कन्वीनर डीन एकेडमिक अफेयर्स प्रो. संकेत विज रहे।

जगदगुरु शंकराचार्य ने भारतवर्ष को अध्यात्म के द्वंद्व से निकालकर दी एक नई दिशा

गोहना, 18 मार्च (रामनिवास धीमान): भारतीय संस्कृति व आध्यात्म के पुरोधा जगद्गुरु शंकराचार्य ने भारतवर्ष को आध्यात्म के द्वंद्व से निकालकर एक नई दिशा दी है। उन्होंने वेदों को सरल भाषा में समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया। भारतीय संस्कृति के कालजयी और यशस्वी उन्नायक शंकराचार्य के जीवन वर्षों की संख्या भले ही कम रही हो, पर उन द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या अनेक जीवन के समकक्ष है। यह उद्गार हरियाणा उच्चतर शिक्षा परिषद, पंचकूला के अध्यक्ष प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा ने बतौर मुख्य अतिथि भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय में आयोजित-'जगद्गुरु श्री शंकराचार्य के दर्शन' विषयक संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए। प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा ने कहा कि शंकराचार्य ने संवाद, शास्त्रार्थ तथा भारतीय वेदों, गीता और उपनिषदों पर भाष्य लिखकर यह प्रमाणित किया है कि भारतीय जीवन शैली श्रेष्ठ है। इस संगोष्ठी में अध्यक्षीय संबोधन करते हुए महिला विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो सुदेश ने कहा कि भारत के महानतम दार्शनिक शंकराचार्य का दर्शन आज भी प्रासंगिक है और इसे छात्रों तक सरल भाषा में पहुंचाने में शिक्षण संस्थान एक अहम भूमिका निभा सकते हैं। इस संगोष्ठी में वक्ता जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रो. रजनीश कुमार मिश्रा, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की प्रो. विभा अग्रवाल ने आदि शंकराचार्य के भाष्य प्रवाह पर अपने विचार रखे। डीन, फैकल्टी आफ सोशल साइंस प्रो. रवि भूषण ने स्वागत संबोधन तथा इस संगोष्ठी का संचालन किया। बीपीएस महिला विश्वविद्यालय की ओर से मुख्य अतिथि एवं वक्ताओं को स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न संकायों के डीन, विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा।

अजीत समाचार
उत्तर भारत का सम्पूर्ण अख़बार
19-Mar-2024
Page: 12
http://www.ajitsamachar.com/20240319/27/12/1_1.cms

दैनिक ट्रिब्यून

महिला विवि में संगोष्ठी, प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा बोले

आदि शंकराचार्य ने वेदों को सरल भाषा में आमजन तक पहुंचाया

सोनीपत में सोमवार को भगत फूल सिंह महिला विवि., खानपुर कलां में आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा। -हप्र

सोनीपत, 18 मार्च (हप्र)

हरियाणा उच्चतर शिक्षा परिषद, पंचकूला के अध्यक्ष प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा ने कहा कि भारतीय संस्कृति व अध्यात्म के पुरोधा जगदगुरु आदि शंकराचार्य ने भारतवर्ष को आध्यात्म के द्वंद्व से निकालकर एक नयी दिशा दी है। उन्होंने वेदों को सरल भाषा में समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया।

भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय में 'जगदगुरु शंकराचार्य के दर्शन' पर आयोजित संगोष्ठी प्रो कैलाश चंद्र शर्मा ने उद्घाटन किया और यह बात कही। शंकराचार्य ने संवाद, शास्त्रार्थ तथा भारतीय वेदों, गीता और उपनिषदों पर भाष्य लिखकर यह प्रमाणित किया है कि भारतीय जीवन शैली श्रेष्ठ है। प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा ने कहा कि भारतीय भाषा समिति देश भर के उच्च शिक्षण संस्थानों में जगदगुरु शंकराचार्य के व्याख्यान के लिए सहयोग कर रही है। इस व्याख्यान का उद्देश्य आदि शंकराचार्य के जीवन दर्शन को छात्र समुदाय के मध्य लाना है। संगोष्ठी में कुलपति प्रो. सुदेश ने कहा कि यह संगोष्ठी विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति और भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ने में सहायक सिद्ध होगी। कुलपति प्रो. सुदेश ने कहा कि जगदगुरु शंकराचार्य ने भारत की एकता और अखंडता को बनाए रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली के प्रो. रजनीश कुमार मिश्रा ने कहा कि बहुप्रचार व दुष्प्रचार के कारण अद्वैत मत को लेकर अनेक भ्रांतियां समाज में व्याप्त हैं। भारतीय चिंतन शैली वैश्विक है। इस अवसर पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की प्रो. विभा अग्रवाल ने भी अपने विचार रखे।